Basha Chikitsa
Sastra
12 No: 5

Vaidiya Jiwan
by
Kul Bishan Shankar Prasad

N.K.P Lucknow 1880

वैद्यजीवन

بيد جيون

जिसको

क्षत्रिय कुल भूषण शङ्कर प्रसाद जी ने लोलिम्बराज संस्कृत पुस्तक से जिस में चरक आदि अनेक ग्रन्थों का सार रचित है भाषानुरागियों के उपकारार्थ अति मनोहर छन्दों में उल्था किया

इस पुस्तक में सम्पूर्ण रोगों की उपयोगिक औषधि वर्णित हैं

तीसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

जनवरि सन १८८० ई०

वैद्यजीवन का सूची पत्र

॥ श्रीगणेशायनमः॥

अथ वैद्यजीवन लिख्यते ॥ दोहा ॥ द्विरद बदन मंगल सदन बिघ्न हरण सिरताज ॥ कृपा करण औ बुधि करण नमो नमो गणराज ॥ १ ॥ अथ छप्पय ॥ तिलक भाल बनमाल अधिक राजत रसाल छवि ॥ मोर मुकुट की लटक चटक बरनत अटकत कवि ॥ पीताम्बर फहरात मधुर मुसक्यात कपोलन ॥ रच्यो रुचिर मुख पान तान गावत मृदु बोलन ॥ रति कोटि काम अभिराम अति दुष्ट निकंदन गिरि धरन ॥ आनंद कंद ब्रज चन्द प्रभु जैजै जय अशरण शरण ॥ २ ॥ सोरठा ॥ गिरिजा रमन कृपाल बिघ्न हरण दूषन दरण मोपर होहु दयाल होहि ग्रंथ भाषा सरल ॥ ३ ॥ रुज नाशक रवि देव तिमिर हरण लौ शमन ॥ नमो चरण तव देव होइ ग्रंथ पूरण शुभग ॥ ४ ॥ दोहा ॥ तापर मैं भाषा करौं दूसरे न जग बहु मांहि ॥ दस्यु कि भयते धनी जन धन नहिं अंत धराहि ॥ ५ ॥ रोग नाशके ग्रंथ बहु चरक आदि बहु जोइ ॥ तिन को सार निकासि कै कीन्ह प्रकाशन सोइ ॥ ६ ॥ विद मुग्धाते ग्रंथ गति वर्णन कीन्ह बनाइ ॥ ताते संबोधन कियो उपमा ताकी गाइ ॥ ७ ॥ गूढ़ यह ग्रंथ है जीवन वैद्यक नाम ॥ कछु कल्पित मति ना करी कबि लोलिंब सुनाम ॥

७॥ नहिं जानत रस रीति गति नहिं ललना की युक्ति॥ ते प्रयास किमि जानिहैं चक्षु
हीन ज्यौं नृत्ति ॥८॥ वैद्य शास्त्र के ग्रंथ जे पढ़े गुरु से होय॥ कर जाके अमृत अवै कृ-
पा बिचक्षण सोय॥९॥ सोरठा॥ निरलोभी जन सोइ धैर्यवान सु कृपाल बड़॥ ऐसो भि-
षक जो होइ ताकी औषध कीजिये॥१०॥ दोहा॥ प्रथम रोग के चिन्ह लखि फेरि निदा-
न मिलाय॥ साध्य असाध्य बिचारि कै औषधि करै बनाय॥११॥ सोरठा॥ मूढ़ वैद्य जो
होय औषध कबहुं न खाइये॥ बुध जन जानै सोय रोग नाश चाहै जो नर॥१२॥ दोहा॥
पथ्य रोगी को जो बनै ताको औषध तौन॥ नहिं जो ताको पथ्य बनै ताहि औषधी कौन
१३॥ दोहा॥ यह वैद्यक में प्रथम श्रम फिरि पाछे सुभ होइ॥ नव बाला के संग ज्यों
प्रथम कष्ट सुख होइ॥१४॥ सोरठा॥ बुधि भरोस मोहिं नाहिं राम नाम अवलम्ब ब-
डु॥ सुमिरत विघ्न नसाइ ते बस स्वामी इष्ट हैं॥१५॥ दोहा॥ नहिं कविताई मैं करी न-
हिं पद लिख्यो विचारि॥ सुजन वैद्य जो होइ कोउ याको लेइ सुधारि॥१६॥ सब रोगन
में ज्वर बड़ो श्रेष्ठ बली सरदार॥ ताते प्रथमहिं कहत हौं कछु ज्वर के उपचार॥१७॥ त-
ज्वरी सो प्रथम दिन ज्वर में लंघन सोइ॥ तेहि पाछे औषध करै मुनिजन भाष्यो जोइ

१८॥ देवदारु किरवार पुनि सोइ काढाई लेइ॥ नागर फिरि धनिया कही पाचन करिकै
देइ॥ १९॥ अथ बात ज्वर काथ॥ अमृता गुनि औषध कही मुस्ता तामें डारु॥ धवा
डारिकै काथ दे बात ज्वर को टारु॥ २०॥ अथ पित्तज्वर काथ॥ बासा औ किरवार
पुनि तिक्ता तामें होइ॥ पर पट औ मोथा सहित पित्तज्वर को देइ॥ २१॥ अथ कफ
ज्वर काथ॥ चौपाई॥ सुंठी पुनि बासा लै आवै॥ धव मुस्ता को काथ बनावै॥ मृग
पति द्विरद बिदारै जैसे॥ कफ ज्वर को मारै यह तैसे॥ २२॥ सोरठा॥ अमृता बिस्वा
होइ कृष्णा तामें डारि कै॥ काथ जो करि कै देइ पवन ज्वर तुरतै हरै॥ २३॥ चौपा॰
लै उशीर पित्पौन मगावै॥ सोंठि किरातक मोथा लावै॥ अवन कटाई दूनो होइ॥
गुरुच गूरखुरू समकरि सोइ॥ काढा करिकै तुरत पिआवै॥ बातज्वर को बेगि नसावै॥
२४॥ कमल नैनि सोचित धरि राखो॥ यह काढ़ा तुमते जो भाखो॥ अमृता परपट मोथा आ
नु॥ औ चिरायता विस्वा जानु॥ पित्त पौन ज्वर दूरि पराइ॥ पंच भद्र काढ़ा इहु आइ॥ २५॥ दो॰
कस्तूरी को तिलक यह तेरे वदन सोहाय॥ सिंहो हरि मृग नैनि कछु सुनहु बचन मम आय॥
२६॥ अति रिजु नाहीं पिक बयनि धरहु बचन जिय मोर॥ पाय पापरा काथ ते पित्तज्वर अति

जोर॥२७॥एकै परपट पित्तज्वर नासन को यह आइ॥ चंदन मोथा सोंठि संग जो कदाचि है जाइ॥२८॥ पित्तज्वर को जारिकै सुनु ललने चित लाय॥ महा कांति दिन दिन बढ़ै मुनि जन दियो बताय॥२९॥ दोहा॥ देखो रे याको पुलिन सुंदर बिसद सोहाय॥ मनो मनो भव सो कहत रति की कथा सुभाय॥३०॥ सोरठा॥ मानत ज्यों रस खानि सुंदर हार अमोल युत बेली कुसमित जानि बन उपबन सब देखियत॥३१॥ दोहा॥ सीतल बायु मंद अति देख परम अनूप॥ मन सिज बेगि जगाइयत मनहुं सेन कहु भूप॥३२॥ चौपाई॥ अनिल तासु अरु मोथा आनु॥ कुटकी अभया तहां सो जानु॥ पित्त पापरा द्राक्षा ठानौ॥ काढ़ा करो बात यह मानौ॥ मुरछा दाह पियासा नासै॥ चित्त भ्रम मुख स्रव बिनासै॥ पित्त ज्वर अति दूरि पराई॥ कमल नैनि सो कस्यौ बनाई॥३३॥ कुटकी और जवासा आनु॥ लै प्रियंगु बासा युत जानु॥ पद्मक और पापरा लेहु॥ काढ़ा कै आतुर को देहु॥ खंड केर प्रक्षेप कराइ॥ तृषा दाह पित्तज्वर जाइ॥३४॥ दोहा॥ धानी अमृता पापरा क्वाथ पित्त ज्वर जाइ॥ परासर मुनि यों कह्यौ तोसों कह्यौं सुभाइ॥३५॥ चौपाई॥ लोहित्त चंदन पद्मक होइ॥ धनिया गुरुचु नीब तहं सोइ॥ क्वाथ बनाय देव यह सुनहु॥ याके गुण मन में सब गुनहु॥ पित्त कफज्व

र दाह पियासा ॥ वमन दूरि कौ छुधा प्रकासा ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ हिरी बेर मुस्ता सहित पित-
पापरा जानि ॥ चंदन अथवा सौंठि लै सीत काथ सब आनि ॥ ३७ ॥ दाह पियासा ज्वर सहित
सपदि दूरि कै सोइ ॥ कांति देह दिन दिन बढै सुखी सदा नर होइ ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ गोजव
नीत ल्याइ वै कोई ॥ एक सौ सहस्र वार कै धोई ॥ दाह सोक दुर्बलता जाइ ॥ ज्वर आदिक
सब दूर पराइ ॥ रोग अनेक नहीं ठहराइ ॥ मर्दन अंगमें कौ बनाइ ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ परतक-
नीमें मन दिये निज लक्ष्मी न सोहाइ ॥ तिमि यहिकै सेवन किये सकल व्याधि टरि जाइ ॥
४० ॥ चौपाई ॥ वाल बेल विस्वा लेहु ॥ कमल उसीर पापरा देहु ॥ मोथा युत षट करहु
विचारि ॥ क्वाथ सीत यह लेव सुधारि ॥ तृषा दाह दूरि ज्वर होइ ॥ पित्त विकार जात स-
ब खोइ ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ कुसुम सुगंधिन आदि दै कमल अमल मृदु बात ॥ नीर केरि रस
कौतुकै पित्त शांत ह्वै जात ॥ ४२ ॥ चंदन औ घृत सार युत कमल सुगंधित माल ॥ मु-
क्तावलि हियरे धरै और सुगंधित भाल ॥ ४३ ॥ मुग्धा बचन पियूष सम सब शृंगार
बनाइ ॥ रमण केलि आलिंग कै पित्त दाह नर हाइ ॥ हाव भाव कै कामिनी बचन कहै
आधीन ॥ सरस परस कै मोह यति पर पहिरे अति झीन ॥ ४४ ॥ सोरठा ॥ सुंदर गाति पर

पंक शय्या पर्यंके फेनसम विसद सु मनहु मयंक ऐसे बसन सुगंध युत ॥४५॥ दोहा॥
नीर कोकिला शारिका इनको सरस संवाद ॥ बीन सितार मृदंग ये आवत सुंदर नाद
४६॥ सोरठा॥ चंद्र मुखी मृग नैनि ऐसी नवोढ़ा आइकै॥ कारव दृगनि की सैनि बचन सु-
धा कहि हिय लगै ॥४७॥ दोहा॥ सो व्यंजन कर सों करै बचन विचित्र बखानि॥ पित्त
उपद्रव सकल जे नासै बेगही जानि ॥४८॥ दाह तृषा अरु मोह युत समन छिप्रही हो-
इ ॥ हंस गवनि सो जानि ये नहिं राख्यो कछु गोइ ॥४९॥ चंद्र मुखी आलस युते मधु-
राधर मुसकान॥ कटि नितम्ब को भार शुभ सुनहु बचन रस खानि ॥५०॥ चंदन सेत
कपूर लै हाहूबेर मिलाय॥ लेप कियेते तुरत हीं दाह सकल मिटि जाय॥ ५१॥ जो निं-
बा के पातको फेन लगावै कोइ॥ जैसे धनिन को धन हरै वेश्या जगमें सोइ॥५२॥ चौपाई
बरण अकार बसन तन भावै॥ उडु गण पति सम आनन राजै॥ चंदन लेप करै मृगनै-
नी॥ दाह स्वासते पावै चैनी॥ पुनः॥ पित्त ज्वर में नहिं कछु साजू॥ क्वाथ फांट रस को न-
हिं काजू॥ अमृतादिक कहुँ खोजन जाई॥ सुनि बोले ये बचन सोहाई॥ मुग्धा अधरस
सेवन करै॥ लो निंबराज सदा विष धरै॥ पुनः॥ प्यारा प्रिये सुनिये ये बैना॥ पित्तज्वर में

और करैना ॥ नाना औषध नहिं कछु करै ॥ होइ बिलंबित फल का सरै ॥ कटुक मिष्ठ
लागत नहिं नीको ॥ खाये बदन होइ अति फीको ॥ बैद्य राज सो कहो बुझाई ॥ जाते
पित्त शांति व्है जाई ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ मुग्धा मुख सेवन करै शीघ्र पित्तज्वर जाइ ॥ सुधा अ-
धिक कांता अधर सुनु बाले चित लाइ ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ धनिया सलिल भेइकै धरै ॥
प्रात समय जो यहि बिधि करै ॥ सिता डारिकै पीवै कोइ ॥ अंतर दाह नास सब होइ ॥
५४ ॥ पुनः ॥ पंचमूल अमृता को लेइ ॥ मोथा सोंठि चिरात देइ ॥ काढ़ा याको लेउ बनाइ
बात पित्त ज्वर देइ भगाइ ॥ ५५ ॥ पुनः ॥ भृंगी कणा कैफरा लेउ ॥ पुहकर मूल तहां सों
देउ ॥ यह अवलेह सहत सों चाटै ॥ स्वास कास ज्वर कफ को काटै ॥ ५६ ॥ पुनः ॥ लेहु भ-
रंगी गुरच सोहाई ॥ देवदारु सिंघी यहि भाई ॥ कणा सोंठि सों डारै मोथा ॥ पुहकर
मूल सहित यह क्वाथा ॥ नासै ज्वर अरु स्वास बिलाइ ॥ बढ़ै भूख अरु रुचि अधिकाइ
पुनः ॥ प्राण पते यक संभ्रम होइ ॥ तिक्त क्वाथ मुख तिक्त हरेइ ॥ हे बाले सो कहो बुझा
इ ॥ वचन मोर सुनिये चितलाइ ॥ ज्यों नोढ़ा कुच पीठिन जोइ ॥ बढ़ै मार त्रिय आनंद हो
इ ॥ पुनः ॥ कटु फल कुटकी धनिया लेउ ॥ मोथा भृंगी बच तह देउ ॥ पित्त पापरा अभया

सोइ॥ लेकु भरंगी विस्वाजोइ॥ देव दारु युत क्वाथ बनावै॥ रमठा मधु प्रक्षेप करावै॥ ज्वर
असलेषम कोप नशाइ॥ कास स्वास मुख शोष विलाइ॥ कोमल कंठन्नु पीर सब जा-
य॥ सोरुचि देखि कहा मैं गाय॥ ५८॥ अथ अरुचि उपाय॥ दोहा॥ गज गामिनी गनौक-
हा बरक बिंद द्विजराज॥ आमिल सैंधव लवंग फल अरुचि नासको साज॥ ६०॥ पुनः॥
कमलकि केसर आनि कै घी अरु सैंधो डारि॥ चाटु बिजौरा के सुरस देइ अरुचि सब टारि
॥ ६१॥ खंजन दृग गंजन करै तो दृग परम अनूप॥ करौ चिकित्सा और कछु निज मतिके अनु-
रूप॥ ६२॥ पुनः॥ सुंदर तनु सुनियै चितलाइ॥ अरुचि उपाय कहौं फिरिगाइ॥ सिंधुजवल्लि-
ज चूरण करै॥ मातुलुंग फल मेलै भरै॥ चलकफ अरुचि दोष सब नासै॥ परम सुधाको करै
प्रकासै॥ कपित्थ ओ खंजन दृग सोहै॥ तो दृग गंजन कै मन मोहै॥ ६३॥ दोहा॥ पंच कोलको का-
थ करि मनु बोले चितलाइ॥ गुल्म सूल अरु आफरो अरुचि सूल सो जाइ॥ ६४॥ अथ सन्-
निपात क्वाथ तोटक छन्द॥ ग्रंथि सुरदारु सो गूगुल लेइ॥ भृंगी त्रिकुटा पुनि चित्रक देइ॥ सु-
रईस के जो भरंग तहां॥ पुहकरमूल बिडंग कहां॥ अभया औ रास्नि रउ कहेउ॥ पाढा बच
चाब सोतेउ लहेउ॥ जटा मासी जवाइनि सो कहो॥ सिंधि ब्रताव कै रात गहो॥ कुंभी युत

क्वाथ करै मृदु वैनी ॥ गुण याके बखानि कहौं गुण रैनी ॥ तेरहौं सन्निपात सो जीति करै ॥
चित भ्रम सेंदु को धूरि धरै ॥ सब बात व्यथा अश्म जरै ॥ कफ शूल अरोचक दाह हरै ॥
सीतांग व्यथा वद जाइ टरी ॥ बुद्धि जाय सो सूतिका रोग जरी ॥ यह क्वाथ विचारि मुनीश कहै
सब सन्तन को मद वेगि गहै ॥ ६५ ॥ छन्द भुजंगप्रयात ॥ अर्क मूले अनंता किराती कहौ
अरणि दंती बचा सो तहां लै धरौ ॥ करो भृंगराजै बतायो तहां ॥ रसना गुंडिका शीघ्र येक
कहां ॥ पंच लवनौ जुते क्वाथ याको करो ॥ सन्न नासै सबै सत्य जानो नरौ ॥ सूतिका बात रोगै
हरै वेगहीं ॥ दंत बंधै मिटै बात सांची कही ॥ ६६ ॥ तोमर छन्द ॥ कटुकी किराती होइ ॥ पौ
घ पर्पट सोइ ॥ रासनि सटीको आनि ॥ श्यामा अमृतु करि मानि ॥ त्रैभाग सिंघी फेरि ॥ विश्वा
शिवा धवहेरि ॥ सुन्दर भृंगी देव ॥ यह क्वाथ करिकै देव ॥ त्रैदोष मूलसु नास ॥ मुखसोस त्रिद
औ कास ॥ धीगुप्त निसि जागर्ण ॥ सदाह ये रुज हर्ण ॥ सो कह्यो मैं अब तोहिं ॥ सब हेरि
ग्रंथन मोहिं ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ सन्निपात अरु काल से भेद कछू नहिं होइ ॥ महा प्रतापी भिषक
सो दूरि करै तेहि सोइ ॥ ६८ ॥ सन्निपात अजगर ग्रस्यो मोचै वैद्यसुरार ॥ आत्म दान वहि दीजि
ये धन्य रजत कह हार ॥ ६९ ॥ सन्निपात अरण्य परे जे निकारि नर लेइ ॥ कोविद नंदनि बरण

ये किंकिं ताहि न देइ ॥ ७० ॥ अथ कर्ण मूल उपाय ॥ चौपाई ॥ अंत त्रिदोष ज्वर जब होइ ॥ श्रवण मूल मह शोथ सो कोइ ॥ लाय जलौका रक्त निकसाइ ॥ घृत पिआउ बुध शोथ बिलाइ ॥ ७१ ॥ अथ लेपः ॥ रास्ना अरनी सोंठि को आनै रजनी दारु ॥ चीत को जानै तुंग जटा युत सो लेप बनाय ॥ कर्ण मूल महँ देइ लगाय ॥ शोथ व्यथा ध्वंसन सब होइ ॥ हे अरविंद नैनि यहि सोइ ॥ ७२ ॥ अथ जीर्ण ज्वर उपाय ॥ चौपाई ॥ पंच मूल को क्वाथ जो पीवै ॥ जीर्ण ज्वर छूटै नर जीवै ॥ स्वास कास शिर मूल को हरै ॥ यह उपाय निश्चै कै करै ॥ ७३ ॥ छप्पै ॥ पीपरि गुड़ में सानि धरै नर बुद्धि विचक्षण ॥ नेम सहित नित खाय जाय तजि जीरण ज्वर तन ॥ अगिनि मंद हटि जाय अरुचि को दोष नशावै ॥ क्षुधा बढ़ै अधिकाइ स्वास अरु कास भगावै ॥ देह दुबर पीतता सकल उपद्रव जाइ हरि ॥ यह खाय सदा जो मुदित होइ द्वन्द्व रोग सब जाइ जरि ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ अमृता क्वाथ बनाइ कै पीपरि चूरण डारि ॥ जीरण ज्वर कफ कृत महा देतहि जाइ सो हारि ॥ ७५ ॥ ज्यों रघुपति रावण हन्यो सहस बाहु द्विज राम ॥ बुधि प्रलंब रेवति रमण त्यों पूजै मन काम ॥ पुनः ॥ दोहा ॥ पंच मूल को क्वाथ करि श्यामा चूरण डारि ॥ जीरण ज्वर कफ कृत बढ़ो आंशुहि देइ निकारि ॥ ७६ ॥ चौपाई ॥ सठी सोंठि पापड़ को आनै ॥ देवदारु

बृहती जुत जाने ॥ कटुकी और जवासा होइ ॥ लेहु किरातक मोथा सोइ ॥ क्वाथ बनाय
चतुर नर धरै ॥ पथा मा मधु प्रक्षेपन करै ॥ सन्निपात जीर्णज्वर नासै ॥ विषम ज्वर ह-
रि तेज प्रकाशै ॥ अथ एकाहिक ज्वर उपाय ॥ ७७ ॥ चौपाई ॥ वासा नींब पटोल को लेउ
अमिल तास त्रिफला ले सेउ ॥ द्राक्षा जुत यह क्वाथ बनाय ॥ सिता औ मधु प्रक्षेप क-
राय ॥ जाय यकतरा ज्वर नहिं रहे ॥ यह उपाय कहवे जो चहै ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ गंगा उत्तर कूल
मैं तापस द्विज को बासु ॥ ताहि असमरण कीजिये सुत विहीन है तासु ॥ जल अंजलि तेहि
दीजिये होय यकतरा नाश ॥ तन्दंगी सो जानिये दिन दिन होइ प्रकाश ॥ ७९ ॥ अथ तृती-
यक ज्वर उपाय ॥ चौपाई ॥ चंदन धनिया सोंठि मंगावै ॥ पीपरि दारु बेर मिलावै ॥ मोथा
सहित क्वाथ बन वाइ ॥ मधु चीनी पुनि लेइ मिलाइ ॥ बेगि तृतीयक ज्वर को हरै ॥ मृग
शावक लोचनि जो करै ॥ ८० ॥ अथ चातुर्थिक ज्वर उपाय ॥ चौपाई ॥ घीउ पुरान खोजि
लै आवै ॥ रमठा जुत सो नास देवावै ॥ चातुर्थिक ज्वर देखि पराय ॥ तोसों प्रिया कहों समु-
झाय ॥ लीलावति नव जोबन बाला ॥ देखत साधू पति ज्यों हाला ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ सरद रैनि
राका शशी तो मुख देखि लजाय ॥ मुनि दुर्मद रस नासलै चातुर्थिक द्रि दिलाय ॥ ८२ ॥ पुनः

बासा सोंठि हरीतिकी औरा तामें होइ ॥ देव दारु औ अवरण को काथ बनावै कोइ ॥ मधु औ खांड मिलाइ कै पियै प्रात नर तित्त ॥ चातुर्थिक ज्वर जारिकै सुख पावै अति चित्त ॥ ज्यों स्वामी तजि देत है मृत्य क्षीण धन देखि ॥ ऐसे निश्चै जानि ये चातुर्थिकहि विशेषि ॥ ८३ ॥ अथ शीतज्वर उपाय ॥ छप्पै ॥ ऋषुषण तन्न मंडारि करै नर पान मुदित मन ॥ अथ सीतज्वर जाय कहत यह बुद्धिवानजन ॥ अथवा मदिरा सेइ जाइ सब शीतताप हरि कम्बल वोढ़न करै शीत भव भीति जाइ टरि ॥ अगर लिप्त पीवर उरज तरुणी दृढ़ आलिंग ॥ काम कुरंगिनि नैन सुनु सकल सीतज्वर भंग ॥ ८४ ॥ पुनः ॥ चौपाई ॥ सुना सीरज्यों मोथा बासा ॥ गुरुच सोंठि निरगुंडी बासा ॥ भृंगराज दद्रुघ्न सो ऐसो ॥ छुद्र औ जवानी जैसो ॥ क्वाथ बनाय जो यह नर पीवै ॥ होइ सुखी अति सुख सो जीवै ॥ शीत ज्वर वन उकटो मानो ॥ ताको प्रबल कृशानुहि जानो ॥ अथ विषमज्वर उपाय ॥ ८५ ॥ चौपाई ॥ अमृतबेन अस्तु ताको लेइ ॥ विश्व अनूपे बिसवा देइ ॥ सिंघो हरि सिंघो को आनै ॥ सघन कचे घन तामें गानै ॥ शिवै शिवा जुत क्वाथ बनाय ॥ मधु अरु प्रयासा लेइ मिलाय ॥ विषमज्वर सब ढूंढ़ि कनाशै ॥ अरुचि जाय अरु क्षुधा प्रकाशै ॥ ८६ ॥ पुनः ॥ रस बन कल्प बनाय कै तिलको तेल

मिलाय ॥ मर्दन कीजे अंग महं विषम ज्वर टरि जाय ॥ वात विथा सब जाय हरि होइ अनं-
दित गात ॥ ज्यों नभ में घन सघन अति दूरे सो लागत बाल ॥ ८७ ॥ पुनः ॥ चौपाई ॥ सोंठ चे-
तकी नित उठि खाइ ॥ विषम ज्वर दुख जाइ सिराय ॥ वृद्ध मान पीपरि करु पान ॥ विषम-
ज्वर को करु अपमान ॥ खाउ मजाजी गुड़ में सान ॥ विषम ज्वर हरु कह्यो निदान ॥ अथ
वा उग्रा गुर में खाइ ॥ विषम ज्वर को देइ भगाइ ॥ दोहा ॥ मल्ली कुसुम सोहावने तव
कवरी में जाल ॥ सिंधो दरि शुभ कांति युत चपल नैनि मृदु चाल ॥ लेहु पटोले रोहिणी
कटुकी तामें आनु ॥ मौरेठी मोथा सहित क्वाथ सो यह मनु जानु ॥ विषम ज्वर सब नाशक-
रु सुनु बाले चितलाय ॥ होइ क्षुधा अरु रुचि बढ़ै कहेउ सो तो रुचि पाय ॥ ८८ ॥ चौपाई ॥
कमल नैनि सो बचन रशाले ॥ तव हिय हार सुखद अति हाले ॥ पटु बर दल मोथा तहं सोई
अमृता नीब सिंघ का जोई ॥ सुनासीर जवली जय तैसो ॥ काढ़ो करै कहति हों जैसो ॥ विष
मज्वर सब देखत गंजय ॥ ज्वरके सकल उपद्रव भंजय ॥ ८० ॥ दोहा ॥ हेम कलस सम
सोहियत तव उरोज अनुरूप ॥ श्यामे श्यामा सोंठ युत विषम को हरण अनूप ॥ ८१ ॥ दो॰
सरण भरि चलता छोरी कय सुनु मुग्धे मम बैन ॥ सावधान हो कहत हों काम कुरंगिनि

२६ नैन॥ मेघनादको मूललै सिर में बाँधे कोइ॥ बिषमज्वर सब नाशि है कह्यो मुनीशन जोइ ९२ १५
चौपाई॥ अबले पदुम रंगतन सोहै॥ चपल नैन देखत मान मोहै॥ रतन जड़ित उर हार बिराजै॥ काम कला बुध शुभ तन साजै॥ गुरच चेतकी मोथा आने॥ क्वाथ क्षौद्र युत यह शुभ जानै॥ बिषमज्वर चिर शीघ्र बिनाशै॥ लोल नयनि शुभ आभा भाशै॥ ९३॥ अन्यच्च॥ तीक्ष्ण बुध चातुर अति सोहै॥ देखत चालु काम जग मोहै॥ कुष्ठा नींब लेय जब ऐसे॥ सख पलाष शिवा पुनि तैसे॥ आज्य सहित यह धूप देवावै॥ बिषमज्वर यह बेगि नशावै॥ ९४॥
दोहा॥ तिक्ता धना उसीर लै मोथा रेणो आनु॥ सहित बेरा क्वाथ दे रोगिनि को हितु मानु॥ बिषमज्वर को नाशिकै सुखसो नर अति जीय॥ आनंद मय यह जानिये जो या बिधि सो पीय ९५॥ भुजंगप्रयात छंद॥ शारिवा निति तिली चंदनै आनिये॥ शालिपर्णी बिषा दाष सो जानिये॥ इंद्रजो बेल मोथा सो लीजै अबै॥ फूल डारै धवा बेर आनै जबै॥ मल्लिका किंजटा निक्रलै कै धरौ॥ पीपरीयुक्त कै क्वाथ याको करौ॥ आज्य प्रक्षेपकै पान सोई करै॥ बिषमनाशै सबै मूड पीरा हरै॥ पासुरी साधि पीड़ा हरै नेगही॥ छर्दि ऐसो पका नाशकै शीघ्रही॥ मूर्च्छा नाशै यथा सत्यजानो चहो॥ बालली ला रजे मंजरी सो कहो॥ ९६॥ अथ कर्मज्वर उपाय तोमर छंद॥ चलु

ह्मको करु सेव॥ होमजप हर देव॥ द्विज साधु गुरुको मानु॥ ग्रह इष्ट ताको दानु॥ औक्ष-
धा जप भय काट॥ करु सहस नामै पाट॥ मणि आदि दान जो होइ॥ जस शक्ति दीजै सोइ॥
हे आठ ज्वर अतिजोड़॥ ज्यों जाति है निशि भोर॥ यह कर्म्म रोग उपाय॥ सो कह्यो है मुनिराय
अथ पथ्य विचारः॥ चौपाई॥ त्रिया रतन में सृष्टि विराजै॥ अति प्रवीन गति मत्त सों लाजै
बोलत बैन सुकंठ सिहाय॥ देखत बदन सो इंदु लजाय॥ ज्वरी होइ अथवा ज्वर छीजै॥
सांझ समै भोजन लघु कीजै॥ हे बाले यह गुप्त उपाय॥ याते तोहिं कह्यो समुझाय॥ ८८॥
इति श्री सची बरण बलंस शंकर प्रसादेन वैद्य जीवन भाषा कृते ज्वर प्रती कारो नाम प्रथमो
विलासः॥ १॥ दोहा॥ विघ्न कदन बारन बदन सिद्धि सदन गुण ऐन॥ तिनके पद बंदन करौं
लहौं मोद चित चैन॥ १॥ सोरठा॥ गुरुच अतीस सो आनि मोथा और चिरायता॥ सोंठि इंद्र
जव मानि काढ़ा करिकै दीजिये॥ ज्वर अतिसार नशाइ यह औषध के योग ते॥ सिंधुर-
कुंभ लजाय तव कुच उन्नत देखिकै॥ २॥ चौपाई॥ चंदन सेत उसीर सो ऐसो॥ कुरो कूट
पाठा पुनि जैसो॥ कमल मरी धनिया अरु मोथा॥ बेल अतीस गुरुच तेहि साथा॥ दही बेर भु-
बनिंब सो आनै॥ ओषधा सहित क्वाथ यह जानै॥ माक्षिक सहित पान यह कीजै॥ अती

सारहेखत सब छोजै॥ ज्वर तृषा अरु दाह नशावै॥ स्वास छर्दि को मूल बहावै॥ पंचमूल पाढ़ा पुनि जोई॥ वेल सोंठि मोथा लै सोई॥ लै उपमाहिने गुरच सोहाई॥ इंद्रजव और वरेण ल्याई॥ कमल गदा उसीर को आने॥ क्वाथ बनाइ करावै पाने॥ अतीसार ज्वर मूल बिनाशै॥ छर्दि स्वास अरु मेटै कृाशै॥ ४॥ दोहा॥ कफ अरु पवन के कोपते अतीसार ज्वर होइ॥ दशमूलन को क्वाथ दै तुरतहि डारै खोइ॥ ५॥ अतीसार ज्वर पित्त को पंचमूल हित क्वाथ॥ पुनः पुनः पूछति कहा हे मृगाक्षि गुरा गाथ॥ ६॥ चौपाई॥ देवदारु अतीस को आने॥ घन विडंब पाढ़ा पुन जाने॥ कूट मिर्च सह क्वाथ बनाय॥ अतीसार ज्वर साफ पराय॥ ७॥ अतीसार सागर अति सोहै॥ जाको कुंभज ऋषि सम सोहै॥ रे ये प्रिये सुनिये चितलाय॥ जो मुरारि सो प्रीति बढाय॥ बालक घन श्री ताहि न भावै॥ धन्य बिस्व कछु मन नहि आवै॥ अतीसार रुज जो कहु होइ॥ ताको यह उपाव करु सोइ॥ बालक श्री घन धान्य को आने॥ बिस्व धुने यह क्वाथ बखानै॥ ८॥ दोहा॥ धनिया हाऊबेर लै मोथा तहं करु सोउ॥ बेल गरी धुन पान करु अतीसार को खोउ॥ ९॥ चौपाई॥ इंद्रय बेल मोचरस लीजै॥ मोथा लोधु सोंठि तहं दीजै॥ धावी कुसुम धवा लै जोरै॥ गुर मिलाय

के तक्र में घोरै ॥ करै पान कारा आंव नशावै ॥ अतीसार चिर वेगि बुझावै ॥१०॥ दोहा ॥
कल्याणी कंचन लता ललितांगी युत मैन ॥ राजै मुख ताम्बूल युत लखनै करु दृग सैन ॥
सोंठि औ धात्री कुसुम लै अजमोदा को जान ॥ तादि मोच चूरण करै तक्र मेलि करु पान ॥
महा उग्र अतिसार को करै विहंडन सोय ॥ यातें कहेउ विचारिकै ग्रंथन को मत जोय ॥११॥
चौपाई ॥ येक नारि वा क्वाथ बनावै ॥ अतीसार ज्वर वेगि नशावै ॥ षोडश वर्ष तरुणि जो
बाला ॥ रमण किये बल जाय सोहाला ॥ बाले अधरण चरण कर सोहैं ॥ कोमल अरुण
देखि मन मोहैं ॥ मल्ली कुसुम हार सुख देनी ॥ तब कुच ऊपर सोहत सेनी ॥ कुंडल सुभग
कपोलन हालै ॥ कटि तट क्षुद्र घंटिका चालै ॥ सूक्ष्म बदन भूषण श्रम धारी ॥ चिन्तित ब-
रण सुगंधित सारी ॥ स्नेहु कूट मोथा युत सोई ॥ ह्रीबेर वृष श्री फल जोई ॥ पियत क्वाथ यह
आंव नशावै ॥ रक्त सूल अतिसार मिटावै ॥१२॥ तोटक छंद ॥ धव बेल गरी अरु सोंठि धु-
रो ॥ पाढ़ा पुनि अंब अतीस खरो ॥ ह्रीबेर सो इंद्रज आन धरै ॥ तितिली पुनि अर्ल जो लोध
परै ॥ फिरि आम्र के बीज मिलाय तबै ॥ सब चूरण कै अनुमान जबै ॥ जल तंडुल से यह
पान करै ॥ कालीन महा अतिसार हरै ॥ यह चूरण के गुण ग्रंथ कहैं ॥ गंगाधर

नतहैं ॥ १३ ॥ दोहा ॥ कंदुकको निंदा करै नव कुच सुभग अनूप ॥ नहिं कोऊ त्रिय सो दिखत नव स्वरूप अनरूप ॥ १४ ॥ दाड़िम कटुकी काथ करु सहत नहां पुनि डारु ॥ रक्त सहित अतिसार को देतहि देत सो टारु ॥ सिला सहलु श्री षंड युत चाउर धोवन पीव ॥ दाह मोह त्रिट रक्त युत अतीसार सो जीव ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ कुक्षि कोमल आमयुत देखै ॥ विविधि भांति अतिसार विशेखै ॥ बेलगरी गुरु सकल संघारै ॥ तोउ रोज लखि श्री फलहारै ॥ सहित जवादृनि मोथा लेउ ॥ नागर बेल उसीर धरेउ ॥ युग परणी अतीसको आनै ॥ बाल बेरा धनिया जानै ॥ सम औषधको धरै बनाय ॥ धूप देइ वा करै करवाय ॥ अतीसार भंजन जो चहै ॥ यह उपाय करिकै सुख लहै ॥ अथ संग्रहणी उपाय ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ पुनर्नवा अजमोदा सोई ॥ चित्रक औ सरफोंका जोई ॥ सोंठि चेलकी कोरी धरै ॥ बेल कंज युत क्वाथ जो करै ॥ अर्श सूल संग्रहणी नासै ॥ बढ़ै क्षुधा सुभ आभा भासै ॥ १६ ॥ सोरठा ॥ सोंठि गुरच को आनि लै अतीस मोथा सहित ॥ करै काथ मनजानि आंउ बंध मेटै सकल ॥ १७ ॥ दोहा ॥ संग्रहणी को नाश कै अगिनि मंद मिटिजाइ ॥ बैदन कों मूहलन को कहेउ मुनीशन गाइ ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ सोंठि क्वाथ करिकै नर धरै

२१ पाछे घृत प्रक्षेपन करै ॥ पाराडु रोग अरु आंव नशावै ॥ संग्रहरणीयुत कास भगावै ॥ पाढ़ा बिषा इंद्रजव सोई ॥ तत्त मोथा कटुकी तहं जोई ॥ लेहु धातु की रस वनु दीजै ॥ बेल सोंठि सम चूरण कीजै ॥ चाउर जल मधु संयुत पीवै ॥ संग्रहनी नाशै नर जीवै ॥ रक्त प्रवाह अर्श कोवा से ॥ गुदा बंद युत पीड़ा नासे ॥ २० ॥ चन्द्रकला निधि चूर्ण ॥ लेहु चिरैता कुटकी जोई ॥ मोथा इंद्रजव लीजै सोई ॥ सोंठि मिरच पीपरि को लीजै ॥ ये औषधै भाग सम कीजै ॥ भाग स्वजुग चित्रक लै धरै ॥ सोरह भाग कूट कै करै ॥ लै सबको चूरण बनवावै ॥ गुड़जल सों यह पान करावै ॥ पांडु अरुचि ज्वर मर्दन करै ॥ कोमल गुल्म मेंह को हरै ॥ अतीसार संग्रहणी जाइ ॥ चन्द्रकला निधि चूरण आइ ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ जवाखार सज्जी पुनि लीजै ॥ तीनि लोन त्रिकुटा युत कीजै ॥ चाब चीत अरु मोदा आनै ॥ पीपर मूल हींग परमानै ॥ जीरा सम सह चूरण सोई ॥ तक्र सहत युत पीवै कोई ॥ क्षुधा मन्द अरु शूल बिलाय ॥ अरस सहित संग्रहणी जाय ॥ पारा प्रिये यह अधिक सोहाई ॥ मैं देखा याको अजमाई ॥ २२ ॥ छप्पै ॥ आने युग पुनि छार हींग अजवाइनि लीजै ॥ पंच लवण को डारि फेरि त्रिकुटा को दीजै ॥ सम चूरण करि धरै पुन यह युक्ति बनावै ॥ अमलबेत अरु लुंगबर के रस भिजवावै ॥ कफ बात युक्त संग्रहणि कु

अर्क सहित माठो सकाल॥ दीपन पाचन होइ अति नैन नयन देखै सुफल॥ २३॥ दोहा॥ चित्र
चाव अरु बेल लै सोंठि सहित सब चार॥ तक्र सहित सेवन करै संग्रहणी हत सार॥ २४॥ चौ०
सोचर मिरच चित्र सम धरै॥ कंजी सहित पान यह करै॥ क्षुधामन्द अरु गुल्म नशाई॥ प्लीह
अर्श संग्रहणी जाई॥ मोथा बेल सोचरस लीजै॥ हाहू बेर उसीर धरीजै॥ इन्द्रजव सह जो क्वाथ ब-
नावै॥ गौ घृत को प्रक्षेप करावै॥ आंव बंध संग्रहणी नाशै॥ रक्त धात युत अरुचि बिनाशै॥ २५
दोहा॥ कृच्छ्र कठिनता जो रुके रस होइ अधिकार॥ सो धौ घृत को पान दे काढहि बेगही छार
कास स्वास ज्वर पांडु युत प्लीहा जाइ बिलाइ॥ संग्रहणी गुद सूल सो देतहि जाय नशाय॥ २६॥
हरि गीती छन्द॥ निदु कास ज्वर अरु सोंफ मुरछा स्वास अधिक बिशेषिकै॥ पुनि दाह हिक्का
वात शूल सु वैद्य मन अनु मानि कै॥ बिद्वेष पुन अतिसार ऐसो और औषध नाकरै॥ गोबिंद
माधो कृष्ण केशो नाम जप हिय में धरै॥ २७॥ इति श्री सत्री वंशावतंस शंकर प्रसादेन वैद्य
जीवन भाषा टीके अतीसार प्रतीकारो नाम द्वितीयो बिलासः॥ २॥ दोहा॥ एक रदन गजब-
दन को हिय में चरण मनाय॥ पुनः चिकित्सा कछु करौं भाषा ललित बनाय॥ १॥ चौपाई॥
कोमल बैनि सुनौ चित लाय॥ स्वासकास प्रतिकार उपाय॥ दश मूलन को क्वाथ बनाय॥ चपला

को प्रक्षेप कराय॥ कास स्वास कौ मूल बहावै॥ यह उपाय जो ने बनि आवै॥ मोथा सोंठि चित्त
की लीजै॥ दूनो गुरा लै गुटका कीजै॥ तीनि दिना याको जो पाय॥ सकल स्वास गुद जाय
नसाय॥ ज्यों ललना को हिमि ऋतु माहीं॥ आलिंगन ते सीत नसाहीं॥ २॥ अथ बिभीति
क अवलेह॥ चौपाई॥ अजा मूत्र को सत पल लीजै॥ सत पल अच्छ तुचा को दीजै
यह अवलेह सहत सों खाई॥ कास स्वास कफ मूल बिलाई॥ ३॥ अथ आर्द्रक अवलेह
चौपाई॥ अद्रक रस पंचास फल लीजै॥ ताहि अर्ध गुराके पल कीजै॥ ताके अर्ध स्वध-
निया लेई॥ यह रुचि कै अवलेह करेई॥ पुनि अवलेह शुद्ध जब होई॥ ये औषध मिलवै
लै सोई॥ मारो लोह जवाइनि आनै॥ तज पत्रज येला लघु जानै॥ जीरा स्याह औ मोथा ली-
जै॥ सार्द्ध सार्ध पल ये सब कीजै॥ यह अवलेह शुद्ध बनि आवै॥ कास स्वास ज्वर अर्श न-
शावै॥ सोफ व्यथा अरु गुल्म संघारै॥ पीनस कफ पथरी को टारै॥ छर्द्द रोग भंजन यह जानै
पुनः पुनः यह सत्य बखानै॥ ४॥ चिंतामणि चूर्णः॥ दोहा॥ रास्न बेरा लीजिये त्रिकुटा
त्रिफला सोइ॥ देवदारु पदमाख औ चूरण कीजै सोइ॥ घीउ सहत सों खाइये कास स्वास
मिटि जाय॥ कफ को नाशै वेग ही चिंतामणि यह आय॥ ५॥ अथ वाशादि क्वाथः॥ चौपाई

बासा रजनी पीपरि लीजै ॥ गुरुच भरंगी मोथा दीजै ॥ बिस्वा सिंघी क्काथ बनाई ॥ मिरचन को प्रक्षेप कराई ॥ महा उग्र कफ स्वास बिनाशै ॥ तेरी अकलल सुगंधित बासै ॥ ६ ॥ अथ लवंगादि बटी ॥ चौपाई ॥ लौंगें मिर्च बहेरा आनै ॥ ये तीनौ सम भाग बखानै ॥ सेत खदिर सम के सब धरै ॥ बबुर क्काथ सों गुटिका करै ॥ आठ घरी में कासै चारवै ॥ जो गुटिका मुख भीतर राखै ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ नील कमल दल नैनि रतन कलित सुंदर बपुख ॥ गज गामिनि पिक बैनि सिंघी क्काथ बनाय कै ॥ पीपरि चूरण डारि सेवत कछु दिन कीजिये ॥ सकल कास को हारि ग्रास करै क्षण एक में ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पीपरि पीपरि मूल लै सोंठि अक्षये नारि ॥ क्काथ सो मधु युत कीजिये सकल कास को हारि ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ प्राणपति मो पीतम सुनिये ॥ मेरे बैन हृदय महं गुनिये ॥ कास स्वास कुशता अति होइ ॥ ताको अति उपाउ कहु सोइ ॥ काम कले सुनिये चित लाय ॥ तब दृग देखि चकोर लजाय ॥ सोंठि बहेरा लीजै सोइ ॥ पीपरि पीपरि मूल जो होइ ॥ सहत सहित जो चूरण खाइ ॥ कास स्वास कुशता अति जाइ ॥ १० ॥ दो० कटु तेल गुड़ से कुये नाश स्वास को होइ ॥ पीयुष अधरे जानिये निश्चै जानो सोइ ॥ तीसरा चूरण कीजिये खांड सहत सो खाइ ॥ कास स्वास चिंता महा नासन को यह आइ ॥ ११ ॥

चौपाई ॥ अच्छनु वामुख पंकज धरिये ॥ कास स्वास चिंता को हरिये ॥ गावगा जने अ-
च्छ जो होई ॥ हनूमान मंदे है जोई ॥ अये प्रिये मलि देखि लजाय ॥ सोंठि भंगी क्वाथ
बनाय ॥ स्वास व्याघ सब यासों हरै ॥ सेवन कछु दिन जो नर करै ॥ त्रिकुट सर्व गुरा सेदन करै
कास स्वास की बाधा हरै ॥ संतन के रुज सोक विनाशै ॥ ज्यों हरि अपने चक्र प्रकाशै ॥ सं-
गवेर रस मधु सो चाटै ॥ कास स्वास की बाधा काटै ॥ कशोदरी सुनिये यह सोइ ॥ फिरि यह
रुज कबहूं नहिं होइ ॥ १२ ॥ दोहा ॥ ऐ तालफल मानि जान ये रत्न कलिन तब अंग ॥ बासा
क्वाथ बनाय के मधु ताको करि संग ॥ यह औषध अति गुप्त है मैं राख्यो हिय माहि ॥ चंद्र
मुखी तोसों कहौं सकल ग्रंथ निर्बाहि ॥ १३ ॥ कास स्वास रुग पित्त गद यस सान मन सो-
उ ॥ सत्य सत्य फिर सत्य है ऐसो और न कोउ ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ त्रिफला गुरच चीनरो लीजै
रास निवाय भंग सो दीजै ॥ त्रिकुटा युत सब सम करि धरै ॥ सब चूरण सम मिश्री करै
सौद सहित अति कास नसाइ ॥ कास बिनासन चूरण आइ ॥ १५ ॥ हरि गीतिका छन्द ॥
सब वात दलि कफ गासकै उन मील पीनस को करै ॥ अरु दृष्टि निर्मल प्रभा तनकी उदर
रोग सबै हरै ॥ हिय रोग मूल उखारि कै पुनि क्षुधा बेगि बढ़ाय नै ॥ फिरि कासस्वास निरास

कैसे जाइ बिषक खाइके॥ इति कास स्वास॥ अथाम बात॥ चौपाई॥ दश मूलन को काथ बनाय॥ रंडी तैल को लेइ मिलाय॥ ललने बिष काथ करि धरै॥ पुनि रंडी मूल पन करै॥ कटि अरु कुक्ष बात की सूलै॥ आम व्यथा को मेटन मूलै॥ औषध दोउ सत्य यह कही॥ लिखा देखि ग्रंथन सो सही॥ रासनि गुर्च सोंठि की लीजै॥ देवदारु दशमूलै दीजै॥ इंद्रजौ युत यह काथ बनावै॥ पुनि रंडी को तेल मिलावै॥ आम बात को मेटै हरै॥ धरि विश्वास जो सेवन करै॥ १७॥ दोहा॥ गुरच सोंठि के काथ ते आवम मोर नसाइ॥ ज्यों पुरुष मद मदन को त्रिया बिलासी पाइ॥ १८॥ अथ नेत्र रोग उपाय॥ चौपाई॥ लोलिंब राज सो कवि कन बानी॥ निज पत्नी सों कहत बखानी॥ सहिजन पल्लव रस मधु आंजे॥ सकल नेत्र की बाधा भाजै॥ बात पित्त कफ क्षत उत पातै॥ नेत्र बिकार सकल करि घातै॥ चखु कि पीरा जाइ नशाइ॥ मुख्य उपाय कहा यह गाइ॥ लोलदृष्टि मृदु कोमल बैनि॥ शिशु लीला युत शुभ गुण ऐनि॥ सांझ समय यह करै उपाइ॥ त्रिफला घीउ सहत सों खाइ॥ बिबिधि नेत्र को रोग नशावै॥ पुनः नेत्र को रोग न आवै॥ फिरि बिचार नर ऐसो धरै॥ निशा समय मैथुन जनि करै॥ नेत्र रोग में अधिक सो नाने

मैथुन निंदित सुजन बखानै ॥२८॥ दोहा ॥ कुबले नैनी कामिनी सुनो नवोढ़ा बैन ॥ समुद्रफे-
न अरजुन स्वरस सितासो अंजे नैन ॥ ज्यों नोढ़ा कुच गहे पति करै नेवारग मीय ॥ रक्त बिन्दु
फूली कटै औषध परम अमीय ॥ श्यामे प्रिय श्यामे सुनहु श्यामा बोधित बैन ॥ श्यामे यह जिय
रखियै सकल गुणन की ऐन ॥ सोना माखी सहत संग जो अंजे युग नैन ॥ फूली कटि छोटी बड़ी
अरु पावै नर चैन ॥ २०॥ चौपाई ॥ दन कुरखी को खोधि मंगावै ॥ ताको डोला यंत्र बनावै ॥ छगरी
मूत्र पात्र में भरै ॥ तामे वह डोला लै धरै ॥ दैके आंच सो लेइ उतारि ॥ सूक्ष्म पीसि त्रिया
सुख कारि ॥ सेंधौं हरदी तनक मिलावै ॥ कपटा आंखिन मांहि लगावै ॥ नेत्र रोग सब हरि
सधारै ॥ बिमल नेत्र करि जक्त निहारै ॥ रतौंधी अंजन ॥२१॥ चौपाई ॥ करना छाल्हि गोमय
रस संगे ॥ अंजन करत रतौंधी भंगे ॥ रसते सह त्रिय संगम करै ॥ महा बली को बल ज्यों हरै
अथ केवरा उपाय ॥ चौपाई ॥ त्रिफला बासा कुटकी लीजै ॥ गुरच चिरैता निंबा दीजै ॥ क्वाथ ब-
नाय सहत युत पीवै केवरा पांडु नाशकै जीवै ॥ देव दारू को फल लै आवै ॥ ताको युक्ति सो ना-
स दिवावै ॥ कमल नैनि चिंतामति करै ॥ केवरा मूल नाशकै हरै ॥ गेरू हरदी अवरा लेइ ॥ चूरण या-
को करिकै देइ ॥ इथान केवरा नासे हेरि ॥ सत्र करै तब आंजन केरि ॥ २३॥ नग सरूपिनी छन्द ॥

अनंत सुरव्य कुंडलै॥मुरवार बिन्दु पै हलै॥ गऊ मो छीर नागरं॥ महाइरंति कामरं॥ बिचार म-
न्वि कीजिये॥ महा अनंद लीजिये ॥२४॥ अथ भग शूल उपाइ॥ दोहा ॥ रंडा औ पिचु मंद
की मींगी लेउ निकारि ॥ निंबा पल्लव स्वरस में गुटिका कीौ बिचारि॥ गुटिका भग भीतर ध-
रे॥ जोनि शूल मिटि जाय॥ सत्वर याके योगते बनिता मंगल दाय॥ २५॥ चौपाई ॥ हेलक-
णी वनि उत्तर मूलै॥ नागर छाग सीर्प घृत तूलै॥ सम तीनौं यह लेय बनाय॥ यो निमध्य
महं देइ लगाय॥ सकल योनि की शूल निकासै॥ भ्रम दामन आनंद बिलासै॥ २६॥ अ-
थ क्षीर दुष्ट उपाव॥ भुजंग प्रयात छंद॥ शारि वा गुर्च मुर्वा स लीजै॥ इंद्र जौ सोंठि मोथा
चिरैता नवै॥ देव धूपै जो निक्का औ पाठा परै॥ तौलि लीजै समै क्वाथ सांई करै॥ सो दिया
पान कै बाल रोगै मिटै॥ दुष्ट क्षीरै हनै अन्य बाधा कटै॥ पुनः बाल पीवै उरोजै जही ॥
और बाधा नहीं जायगी सो नहीं॥ २७॥ अथ प्रदर उपाइ॥ दोहा॥ हरदी दारु रसौत ले
मोथा वासा लेउ॥ भिलावा भूनिंब मिल क्वाथ सो करिकै देउ॥ चंचल लोचनि सहत युत
प्रदर मूल सो जाय॥ सेत रक्त दूनो मिटै त्रिय आनन्द न माय॥ २८॥ चौपाई॥ फिरि कुदले
हल नैनि उपाई॥ तो मुख हिमकर छेवि लजाई॥ लाला कुजर रसौत लीजै॥ सहत औ तंदुल

जलसों पीजै ॥ तरुनी प्रदर मूल सो जाइ ॥ सुंदरि तोसों कह्यौ उपाइ ॥ सुनहु सरोरुह सोरुह
लोचनि ॥ प्रदर रोग करिये जनि शोचनि ॥ चौराई रसोत को ल्यावै ॥ मधु तंदुल जल पानक
रावै ॥ सकल प्रदर यासों मिटिजाय ॥ जो बाले यह कौ उपाय ॥ २८ ॥ अथ गर्भ पातन ॥
दोहा ॥ ६ ॥ इंद्रायनि की मूल लै पीसि योनि में लाइ ॥ मज्जन कै त्रिय जानिये रह्यो गर्भ गि
रिजाइ ॥ रंडा औ व्यभिचारिणी कुलटा जग में कोइ ॥ तिन को आनंद कारण को लिख्यो
ग्रंथ में सोइ ॥ ३० ॥ अथ गर्भशूल छर्दी उपाय ॥ चौपाई ॥ धनिया मिश्री को लै आउ ॥ तंदु
ल जलसों क्वाथ बनाउ ॥ गर्भिणि त्रियाकर्सोंहनै ॥ सुखसों वह बालक को जनै ॥ लुंग मूल
मोरेटी लीजै ॥ सहत चीय युत क्वाथ कीजै ॥ गर्भिणि सुमुखि शूल सब जाय ॥ चित्त भ्रम
अरु छर्दि नशाय ॥ सुख सों बालक जन्मै सोइ ॥ सकल शूल की बाधा खोइ ॥ ३१ ॥ अथ
रुधिरास्रक गर्भिणी सूतिको उपाय ॥ तोटक छन्द ॥ मखान उसीर अतीस धरै ॥ मोथाह्री
बेर धमास परै ॥ खस्खना अरु पर्पट गुर्च लहेउ ॥ सित चंदन लै यह क्वाथ कहेउ ॥ त्रियगर्भि
णि औरं प्रसूति कही ॥ रुधिरास्रै बंद विकार सही ॥ गर्भिणि ज्वर पद्रव कोप मिटै ॥ रक्ताभ
अतिसार को मूल कटै ॥ रसग्रंथन महं यह देखि लिखा ॥ यामें नहिं भाषो बैन मृषा ॥ ३२ ॥

दोहा॥ मोथा और अतीस लै ककरा शृंगी पाइ॥ चूरण करि यह छौद्र सों नित उठिकै जो खाइ॥ त्रिया बानि अरु कासज्वर नाशन को सरदार॥ अथवा छौद्र अतीस भजु गुण पूरब निरधार॥ २३॥ अथ बालक चिकित्सा॥ चौपाई॥ लेहु मजीठ धवा के फूल॥ लोध शारिवा लीजे मूल॥ सहत डारिकै क्वाथ पिआवै॥ बालक अतीसार सुरझावै॥ धवा लोध मोथा ले लीजै॥ बेल मजीठ बेर ही दीजै॥ क्वाथ छौद्र पुन देय बनाय॥ बालक अतीसार नर हाय॥ अथवा याको चूरण करै॥ सहत सहित अतिसारै हरै॥ दो०॥ ककरा सिंगी षोयरी मोथा और अतीस॥ चूरण सम करिकै धरै महा मिही अति पीसि। छौद्र सहित चातुर भुजी चाटै बालक कोइ॥ कास स्वास अतिसार ज्वर निश्चै नासै सोइ॥ २४॥ इति श्री छत्र वंशावतंस शंकर प्रसादेन वैद्य जीवन भाषा कृते कास स्वासादि प्रतीकारो नाम तृतीयो विलासः॥ ३॥ दोहा॥ मदन कदन सुत के चरण वंदन करौं बहोरि॥ ह्वै प्रसन्न पुरवौ सकल मंजु मनोरथ मोरि १॥ अथ यक्ष्मा उपाय॥ दोहा॥ वैद्य राज लोलिंब नृप बानी अमृत सोहाय॥ तृप्त होहिं हिय मोर नहिं पुनि बरनौं चित लाय॥ छई रोग उत्पतिको नाश कहौं जगहेत॥ सिंह को सेवन कीजिये नाशै मूल समेत॥ बहु औषध वर्णन किये मन बिश्वास न होइ॥ कमल नैनि याते

कह्यो वैद्यक सार निचोड़ ४ चौपाई ॥ हे सुंदरि शुभ आनन सोहै ॥ सुंदर नेत्र देखि मन मो-
है ॥ नैनाखंड सहत युत लीजे ॥ प्रातहि लेह को सेवन कीजे ॥ उडगन पति सम सदई संघारै ॥
जो उपाय यह करै बिचारै ॥ अथ व्रण उपाय ॥ चौपाई ॥ कोमल कुंतल अवली सोहै ॥ छा-
दति कुच मखी युत मोहै ॥ त्रिफला क्वाथ में गूगुर डारै ॥ पियत महा व्रण मूल संघारै ॥
५ ॥ अथ मेद रोग उपाय ॥ चौपाई ॥ नाम लिये तो मदन सतावै ॥ रजके ले यह बड़ो प्रभा-
वै ॥ सहत घोरि जल प्रातहि पीवै ॥ मेद रोग नाशै नर जीवै ॥ जो गणनाथ बदर सम भा-
रै ॥ मेद सोख शुभ बदन संवारै ॥ ५ ॥ अथ कृमि उपाइ ॥ दोहा ॥ त्रिफला त्रिकुटा इन्द्रज-
व निंबा चवदु मंगाय ॥ खयर उगू गंधा सहित इनको क्वाथ बनाय ॥ छेए मूत्र को छे-
षके पान करै नर कोइ ॥ महा जाय क्रमि रोग हरि निश्चै जानौ सोइ ॥ ६ ॥ अथ मुखरो-
ग उपाय ॥ चौपाई ॥ पाती दल त्रिफला ले आवै ॥ निशा दारु धौ फूल मिलावै ॥ गुर्च
मुनक्का युनिये लीजे ॥ क्वाथ बनाय सहत सों दीजे ॥ बार बार कुल्ला फिरि करै ॥ आन-
न रोग पाक मुख हरै ॥ ७ ॥ अथ अमल पित्त उपाय ॥ तोटक छन्द ॥ भूनिम्ब पटोल छ-
तावरि ले ॥ वासा त्रिफला पिचु मंद हिदे ॥ भंगरा अरु रेनव आनि धरै ॥ यह क्वाथ बनाय

कै छौंड़ परै॥ अमिलै अरु पिन की मूल नरौ॥ गनिका ज्यौं विलास में चित्त बसै॥८॥ अथ प्रमेह उपाय॥ चौपाई॥ सुंदर कुसुम दाम अनमोलै॥ लोचित बदन कुचन पर डोलै॥ पर्म प्रकाश विभूषन सोहै॥ अस कछु कवनन देखन मोहै॥ धात्री फल को काथ बनावै॥ हरदी रज मधु छेप करावै॥ जो प्रमेह नासन मति आवै॥ यह विचार कै काथ पियावै॥९॥ दोहा॥ मधु औ त्रिफ्ला स्वरस मजु माना जाय प्रमेह॥ सई इंदु आनन सुनहु थारै त्रियन सों नेह॥१०॥ अथ बात रक्त उपाय॥ दोहा॥ रति की केलि कलानि मैं तो सम चतुर न कोइ॥ पर बल सम उन्नत उरज कंकरण करमें सोइ॥ असृता काथ बनाय कै रंडी तैल मिलाय॥ बात रक्त नाशन महा जो यह करै उपाय॥ चौपाई॥ मौरठी मंजीठ को लीजै॥ दारु सरीवा काथ करीजै॥ पुनि रंडी का तेल मिलाय॥ बात रक्त नासन यह आय॥ बासा गुर्च काथ करि लीजै॥ रंडी तैल को छेप करीजै॥ बात रक्त नासन जो चहै॥ यह उपाय करि कै सुख लहै॥१२॥ अथ विशूचिका उपाय॥ सोरठा॥ लहसुन जीरा आनि सेंधो गंधक हींग लै॥ त्रिकुटा लीजै जानि चूरण सम करि कै धरै॥ निंबू रस में खाय हरै विसूची सकल विधि॥ भाखौ चित्त लगाय है रति केलि बिचक्षणी॥१३॥ अथ तृषारोग उपाय

दोहा॥कूट औ लाई धानकी बटके रोह मँगाउ॥मौरेठी अम्बुज गरी मधुसो बटी बना उ॥गुटिका मुख अंतर धरै ननक ननक रस खाय॥महा त्रषा नाशन कह्यो लघु उपाय दरसाय॥१४॥अथ बात उपाय॥चौपाई॥ये लाल घु लौगें चरि दीजै॥लय पियंगु पीपरि युत कीजै॥मोथा चंदन पुनि लै आवै॥केसरि नाग तहां मिल वावै॥बेरगरी लाई लै धरै॥मिही पीसि चूरण सम करै॥खांड सहत युत लेह चढ़ावै॥बात पित कफ बात नसावै॥१५॥अथ दाह उपाय॥चौपाई॥रमणी रूप देषि तब शोभा॥चतुर बैनि सुनु मन अति लोभा॥सुंदर चिबुक अधर रतनारे॥अद्भुत हार अमोल निहारे॥पदकर कमल अरुण सम सोहै॥रति मे कुशल कला अति मोहै॥हे बाले पर्यंक मंगावै॥तापर कदली पत्र बिछावै॥तेहिपर सुन्दर सैन नर करै॥दाह और आतप श्रम हरै॥१६॥अथ खाजु उपाय॥भुजंग प्रयात छन्द॥पारदै युगम जीरा निशा द्वै धरै॥मिर्च सिंधूर लै गंधकै जो परै॥मनसिलै डारिकै ताहिं भेदा करै॥घीउ मेलै सबै खूब घोटै खरै॥देह लेपै त्रधा खाजु बाधा हरै॥ग्रंथ भाषै यथा सत्य जानो नरै॥१७॥अथ बेवाई उपाय॥छप्पै॥सोधो सहत को आनि राल गूगुर उघ आनहु॥

२७ गेरू गुर अरु मोम घीउ तामें सम जानहु ॥ मल हम लेहु बनाय चरण मे ताहि लगावै ३७
सफल बेवाई जाइ फाटि टूटी जुरि आवै ॥ २८ ॥ दोहा ॥ होइ रस चिक्कन कमल सम सुं-
दर बरण सोहाय ॥ अद्भुत ग्रंथन में लिख्यो सो मैं कहेउं उपाय ॥ २९ ॥ अथ अर्श
उपाय ॥ दोहा ॥ पथ्या तिल भिल्ला तलै तीनौ सम पिसवाइ ॥ दूने गुड़ से सानि कै
मोदक लेहु बनाइ ॥ हरै अर्श कालीन अति कुष्ट पाण्डु ज्वर जाइ ॥ कास स्वास प्री-
हा हरण नाशन को यह आहु ॥ २० ॥ अथ गंड माला उपाय ॥ चौपाई ॥ भिल्लावा
कसीस मंगवावै ॥ दंति मूल गुड़ चीत मिलावै ॥ अर्क दुग्ध मह लेप बनाय ॥ पुनि वह
नम्र लेइ करवाय ॥ लेपत गंड माल दुख धोवै ॥ + ॥ ज्यों समीर घन मालहि खोवै ॥ २१ ॥ अ-
थ कंठ रोग उपाय ॥ दोहा ॥ इंद्रजव कुटकी आनिकै पाढ़ा बासा लेहु ॥ देव दारु मोथा
सहित काथ छौद्र सों देहु ॥ अथवा सुरभी मूत्र सो सेवन करै जो कोइ ॥ कंठ रोग
नाशै सकल वाणी निर्मल होइ ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ पाढ़ा रस उज हरदी जोइ ॥ जवाखार
पीपरि ले सोइ ॥ तेज वाला सुर दारु मिलावै ॥ सम करि चूरण मिही पिसावै ॥ ताकी
छौद्र सों गुटिका करै ॥ सो गुटिका मुख पंकज धरै ॥ कंठ रोग कोदिन मिटि जाइ ॥ सो यह

तोसो कह्यो उपाय॥ २३॥ अथ अगिन मंद प्रती कारो उपाय॥ हरि गीतिका छंद॥ निंबु वासु रसमै आद सैंधव पीसि चटनी कीजिये॥ भोजन प्रथम हीं चाटि कै ये सकल गुण सुनि लीजिये॥ हिक्का औ कंठक रोध नाशै हरै रोगनि का सही॥ बहु सोथ संग्रहणी हरण कफ कास स्वास विनाश ही॥ कटु उष्ण लघु रुचि कर सुधा कर धागु पुष्टि बखानही॥ अति स्वाद करहि अबंध नाशै अन्न अधिक पचावही॥ सो प्राण प्यारी कहेउ तोसो महा रुचि नव देखि कै॥ पुनि जठर देख उपाय बरणो सुनहु चित्त लगाय कै॥ २४॥ अथ वृहत निम्बादि चूर्ण॥ भुजंग प्रयात छन्द॥ हिंगुवा छार सिंधु सौ वर्चलै॥ कंज मूर्दी मिलै पापरी मूल लै॥ + ॥ चाव चीते पाचा मिर्च जो रामरै॥ चेतकी सोंठि ही बेर मोदा धरै॥ सटी पीपरी धान्य लै पुः करै॥ अम्लवेतै विडंगै समै लै धरै॥ चूर्ण सेवै जया शक्ति भाखै गुनै॥ अश्मरी अर्स प्लीहा सहालै हनै॥ आम बंधै विबंधै औ शूलै हरै॥ पांडु गुल्मै हरै रोग सोई जरै॥ विर्सला आनने अग्न मंदै महा॥ कास स्वासै सहिक्का विनाशै कहा॥ २५॥ दोहा॥ भोजन प्रथमै घीव सों सेवन करै जो कोइ॥ कंत गुल्म हा सुधा कर हिङ्का घ्र कहै

सोइ॥२६॥ अथ हिंग्वाष्टक चूर्ण॥ दोहा॥ हिंग त्रिकुट अजमोद लै पुनि जीरा युग लेहु॥ सेंधो सों न मिलाय कै चूरण सम करु सोइ॥ २७॥ अथ रुचिक्याद्दि चूर्ण॥ चौपाई॥ सोंचर सेंधव चित्रक लीजै॥ त्रिकुट चैल भारंगी दीजै॥ शिवा और युग जीरा आनै॥ वाय भरंग जवाइनि जानै॥ अजमोदा युत चूरण करै॥ मातुलुंग अमली रस परै॥ तामे गुटिका लेय बनाय॥ अग्निमंद अति देइ नशाय॥ सकल बदन की शूल नशावै॥ पचै अन्न अति क्षुधा बढ़ावै॥ २८॥ अथ सुंठ्यादि चूर्ण॥ तोटक छंद॥ सुंठी युग ली निसो भाग धरै॥ पीपरी पुनि तामहं चारि परै॥ अजमोद जवाइनि भाग धरै॥ युग भागसो सेंधो आनि दरै॥ सब चूरण के सम डारि शिवा॥ सुंठ्यादि प्रसिद्ध सो नाम भवा॥ तोलिक सो रस विचारि कहै॥ मल ताप प्रलाप को वेगि दहै॥ उदरै पुनि शूल अनेक दहै॥ सब वात व्यथा अरु आंव हरै॥ निशि वासर भोजन चित्त बसै॥ नाना विधि भोजन दोष नसै॥ २९॥ अथ बड़वा नल चूर्ण॥ दोहा॥ सुंठी पीपरि चींतिले पुन विडंग मिलाइ॥ कंज की गूदी हरंड सम शर्करा मिलाइ॥ अग्नि मंदावे सुधाकर बात गुल्म नव जाय॥ बड़वा नल चूरण कह्यो ग्रंथन को मत पाय॥ ३०॥ अथ विद्रधि उपाय॥ चौपाई॥ सहिंजन और जवायनि लीजै

बारुण वृक्ष निशा धै दीजै ॥ चल नर नर युत क्वाथ बनाइ ॥ चपला चूरण लेइ मिलाइ ॥ बिद्रधिरोग समूलै हरै ॥ यामें नहिं संशय कछु करै ॥ ३१ ॥ अथ हृदय रोग उपाय ॥ दोहा ॥ कमल कली सम उरज तव तापर सोहत हार ॥ मनमोहिन हिय अंगने सुनी बचन यहि बार ॥ अर्जुन क्वाथ बनाय कै अर्जुन स्वरस मिलाय ॥ पुनि तामें घृत छेपकै हृदै रोग मिटि जाइ ॥ ३२ ॥ अथ दंत रोग उपाय ॥ चौपाई ॥ सुनहु प्रिये मम वचन बिशेषै ॥ गंधित बकुल वृक्ष यहदेषै ॥ सुंदर बदन बंधु सम सोहै ॥ चलति दंति की औषध सोहै ॥ ताकी त्वचा को चूरण करै ॥ कछुक काल दंतन में धरै ॥ हाले दंत बज्र सम करै ॥ सकल दसन की बाधा हरै ॥ ३३ ॥ हरि गीती छंद ॥ सम जाति पत्र पुनर्नवा गज करण रंड छुलावरै ॥ निशि दारु बच औ कूट सुंठी चूर्ण कै मुख में धरै ॥ कृमि जात नाशक कटै दुरगंधि आनन की हरै ॥ मुख रोग सकल बिनाशि कै औ दंत बज्र महा करै ॥ ३४ ॥ अथ रक्त पित्त उपाय ॥ चौपाई ॥ दाख शिवा वृष क्वाथ बनाय ॥ खंड सहत पुनि लेइ मिलाय ॥ रक्त पित्त के मूल बिनाशै ॥ हरै स्वास अरु भंजै काशै ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ कुंजर मस्तक को हनै बचन न वोढ़ा जोइ ॥ नर संबोधन समुझि कै बद मृगनैनी सोइ ॥ रक्त पित्त निश्चै हरै मुनिजन कह्यो

बिचारि ॥ मृगनैनी तोसो कह्यो याते गुप्त निकारि ॥ ३६ ॥ अथ हिक्का प्रतीकार ॥ चौपाई ॥
बिस्वा करणा आंवरे लीजै ॥ मिसिरी सहत सो लेह करीजै ॥ प्रात काल जो नर यह खाय ॥
हिक्का दोष सकल मिटि जाय ॥ जो गुड़ सानि कै सुंठी खाइ ॥ तब हिक्का अधिकार नशा-
इ ॥ ३७ ॥ अथ भ्रम प्रतीकारः ॥ दोहा ॥ लेहु जयास क्वाथ करि घृत प्रक्षेप कराइ ॥ नाशै
भ्रम गोविन्द ज्यों भक्तन को दुख जाय ॥ ३८ ॥ अथ शोक भंजन उपाय ॥ चौपाई ॥ ऐरल
कल्ले सुंदर बसु सोहै ॥ हंसी सुगति चालु मन मोहै ॥ गर्भित मदन नेत्र अनि आरे ॥ सु-
नहुबैन मम परम पिआरे ॥ वैद्य राज्य मणि बद सुनु सोई ॥ जो अति शोक सो व्याकु-
ल होई ॥ ताको मदिरा पान करावै ॥ नाना शोक की मूल नसावै ॥ ३९ ॥ अथ उरु अस्तं-
भन उपाय ॥ दोहा ॥ पुनर्नवा सुंठी गुरच देवदारु पुनि लेइ ॥ शिवा भिलावा मूल दश क्वा-
थ जो करिकै देइ ॥ बंधै मूत्र की धार अति उर अस्तम्भन जोइ ॥ अथवा सुरभी मूत्र में गुग्गु-
ल पीवै कोइ ॥ ४० ॥ मूत्र कृच्छ पथरी को उपाय ॥ चौपाई ॥ कुश औ कास मूल लै-
लीजै ॥ गुरखुरु शिवा जवासा दीजै ॥ अमिल तास सो भेद पषान ॥ क्वाथ क्षौद्र सों कीजै-
पान ॥ महा असमरी दुस्तर हरै ॥ मनके सिद्धि मनोरथ करै ॥ ४१ ॥ सोरठा ॥ एला भेद पषान

शिला जीत पीपरि सहित ॥ गुड़ जलमें कर पान अथवा तंदुल बारिमे महा अस्मरी
जाय ॥ मूत्र कृच्छ निश्चै हरै ॥ याते पुष्ट उपाय जो चूरण सेवन करै ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ ६ ॥
बासा रेणु कचयला जोइ ॥ भेदपषान इलाची होइ ॥ ताल मखाना रंडा परै ॥ मोरेठी
युत क्वाथै करै ॥ शिला जीत प्रक्षेप कराय ॥ पुनः खंड को लेइ मिलाय ॥ मूत्र कृच्छ अ-
स्मरी बिलाय ॥ कछु संशै यामें नहिं आय ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ भेद पषान हरीतकी गो-
खुरू लेहु मिलाय ॥ आरग बधै जवासले इनकी क्वाथ बनाय ॥ मधु युत जो सेवन
करै कृच्छ दाह मिटि जाय ॥ मूत्र बंध खोलै महा धातु पुष्ट अति आय ॥ ४४ ॥ अथ
मुहरसा झांईको उपाय ॥ तोमर छन्द ॥ बट रोह कुष्ट लोधु ॥ मंजीठ प्रियंगु जो सोधु
मसुरी अतीस जो लेइ ॥ रातोसि खंडसु जोइ ॥ पय सन्मुखै मे लाय ॥ मुह रसा झांई
जाय ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ मसुरी चूरण दूध घृत कर उबटन मुख सोइ ॥ सप्त दिवस झांई ह-
रै शशि सम आनन होइ ॥ इंगु अफा लगुदी मिलै बदरी गूदी लेइ ॥ जल सो लेप-
न कीजिये महा कांति मुख होइ ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ लोध बचा धनिया ले धरै ॥ इनको
उबटन मुखमें करै ॥ सकल मुहरसा जाय नशाय ॥ पिडिका रोग महा मिटि जाय ४७

अथ आनन रोग उपाय ॥ दोहा ॥ खरी पुरानी तिलकी सुरभी मूत्र सनाय ॥ यह उबटन मुखमें करै रक्त फटिक मिटिजाय ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ मुर्गा विष्टा ल्यावै कोइ ॥ तामें सुरभी मूत्र मिलोइ ॥ यह उबटन जो मुखमें करै रक्त विकार के मंडल हरै ॥ केवल तिलको उबटन करै ॥ सकल रोग आनन के हरै ॥ ४९ ॥ अथ सोफ उपाय ॥ दोहा ॥ पुनर्नवा सुर दारु लै सुंडी पुहकर आनु ॥ रसनी बिंबी सुरस लै तेल पचावै जानु ॥ सुंदर तेल बनाय कै चीकन पत्र धराय ॥ मर्दन कीजै अंग में महा सोफ मिटिजाय ॥ ५० ॥ चौ० सोंठि चिरैता कटुकी लीजै ॥ त्रकी अब्द सिंघिनिनिशि दीजै ॥ जीरा पंच कोल लै धरै मिही पीसि चूरण सम करै ॥ गरम नीर सों चूरण खाय ॥ महा सोफ अति सोफ नसाय ५१ ॥ अथ शिर पीडा उपाय ॥ दोहा ॥ पीड़ा सोंठि पटोल लै सहिंजन कूट मंगाय बीज पवार ऐ रंड अरु कांजी मांह पिसाइ ॥ मस्तक लेपन कीजिये नाना बिथा बिलाय ॥ महा शीस पीड़ा मिटै अति लघु कह्यो उपाय ॥ ५२ ॥ अथ श्रवण पीड़ा उपाय ॥ चौपाई ॥ अरक पत्र कछु पीत मंगावै ॥ तनक सो घृत तामें लपटावै ॥ पुनि वै तप्त अगिनि पै करै ॥ फिरि मलिकै निकारि जल धरै ॥ वह जो श्रवण में डारै

कोऊ॥ अवरा मूलको बाधा खोऊ॥५३॥ अथ बात व्याधि लघु राज मृगांक लिख्यते॥
पीउ मिर्च सुरसा रज लीजै॥ लघु मृगांक यहि नाम कहीजै॥ सकल बात अति बात
निकारै॥ भक्ति शोक ज्यों विष्णु संचारै॥५४॥ अथ पित्त उपाय॥ दोहा॥ अम्बु भेद कै
गुरुच को ताको रस निकसाय॥ सिता डारि सेवन करै सकल पित्त मिटि जाय॥ तरुण पु-
रुष को मद हरै ज्यों तरुणी रति माहिं॥ पित्त शान्ति ऐसे करै तब रति देखि लजाहिं॥५५
अथ कफ उपाय॥ दोहा॥ अमृता क्वाथ बनाय के सहत डारि के पीव॥ कफ की भव भै सब
हरै अति सुख पावै जीव॥ तब कटि सूक्ष्म देखि के केहरि गये लजाय॥ छीन लई तेहि रद
गति गौने श्वास उड़ाय॥५८॥ इति श्री ब्राह्मवंशावतंस शंकर प्रसादेन वैद्य जीवन भाषा टीके
क्षयादि प्रतीकारो नाम चतुर्थो विलासः॥४॥ दोहा॥ मकराकृत कुंडल श्रवण चन्द्र भाल
गण नाथ॥ सिद्धि बुद्धि दायक सदन नमो चरण धरि माथ॥१॥ अथ बाजी करण लिख्यते
हरि गीती छन्द॥ ताम्बूल मदिरा बन सुगंधित कुसम चित्रित माल॥ शृंगार अवर सुगंध सं-
ज अरु नई योवन बाल॥ मृदु शब्द गान बाद्य स्वर रस हास्य वर्ण सोहाय॥ दश कहे हैं उप-
चार में यह क्लीव मदन जगाय॥२॥ दोहा॥ मौरेठी चूरण सहत घीव दूध सों खाय॥ तौ त्रिय

संगम अति करै बीर्ज पुष्ट ह्वै जाय ॥ ३ ॥ गुरच आंवरे गोखुरू सम सरकरा मिलाउ ॥ घृत में चूरण लै ह्वै ऊपर दूध पियाउ ॥ अजर अमर अति बीर्ज के सन्नि देव सम होइ ॥ महा पुष्टि त्रिय मद मथन जो यह सेवे कोइ ॥ ४ ॥ अथ मदन प्रकाश चूरण ॥ चौपाई ॥ गुर्च स्वयं गुप्ता लैलीजे ॥ ताल मखाना गुखुरू दीजे ॥ बरा साल्मली असगंध सोय ॥ बीज केवांच बेरण जोय ॥ चूरण मिस्री दूध सों प्यावे ॥ संध्या काल सैज में आवे ॥ बढ़े काम कामिनि सुख पावे ॥ पुरुष आदि आनंद बढ़ावे ॥ मदन प्रकाशक चूरण कह्यो ॥ याके गुण मैं सब लह्यो ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ताल मखाना गुखुरू लीजे ॥ बीज केवांच के चूरण कीजे ॥ चूरण सम सरकरा मिलावे ॥ पंकी ऊपर दूध पियावे ॥ वृद्ध खाय योवन मद पावे ॥ तो बालन सों नेह बढ़ावे ॥ यवाकर गुण कौन बखानौं ॥ ह्रनै माननी मानहि जानौं ॥ ६ ॥ दोहा ॥ हे सुंदरि प्रिय बचन सुनु पुरुष बिलासी जोइ ॥ आनि छुहारा मूल को चूरण कीजे सोइ ॥ पैके संग सेवन करै रमें एकशत तीय ॥ हों अबही यह पानकै रति में देखों पीय ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ लेहु बिलारी कन्द मंगाय ॥ ताको चूरण मिही पिसाय ॥ पुनः बिलारी सुरस निकारि ॥ देइ भावना कछुक बिचारि ॥ सुष्य जानि घृत छोद मिलावे सेवन दिन दिन देव बतावे ॥ दस अंगना भोग नित करै ॥ पुनः तृप्ति जियमें नहिं धरै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ खोदि बिलारी कन्द को चूरण करो सुजान ॥ घीव दूध सों खाइये कर्षन्नु चारि प्रमाण ॥ वृद्ध पुरुष

को तरुण के काम चौगुनो जान ॥ पुष्ट स्वगाती हरण को औषध अभी समान ॥ ९ ॥ सोरठा
गुग्गुल ताल मखान बीज केवांच छतावरी ॥ ककई बीज बखानु लेउ अनि व ना चूर्ण कै
चूर्ण पै संग पीउ जाके गृह शत एक त्रिय ॥ अति सुख पावै जीव पुष्ट धातु अति बल करे
१० ॥ चौपाई ॥ अति सौभाग्य पुष्टि बल चढ़ै ॥ मदन देव बाढ़त दिन कढ़ै ॥ यद्यपि औषध
विविधि प्रकारे ॥ तदपि सेवन में अधिक पचारे ॥ मिसिरी घीउ दूध में पीवै ॥ बहुत काल
पुष्टित नर जीवै ॥ विविधि ग्रंथ कीन्हों में सेखा ॥ याके सरिस और नहिं देखा ॥ सो वाले
यह धरु जिय माहीं ॥ या सम और दूसरी नाहीं ॥ ११ ॥ अथ सिद्धार्थ रस लिख्यते ॥ दोहा
सुनहु प्रिये अब सिद्धि रस कल्प लता जग माहिं ॥ देत मनोरथ सिद्धि सब नाना विथा वि-
लाहिं ॥ १२ ॥ अथ विषविताप हरण रस लिख्यते ॥ भुजंग प्रयात छन्द ॥ चेतकी पीपरी
अर्क दंती गहो ॥ तिन्हु के काल कूटै निसोते लहो ॥ और तिक्का वली पारदै शुद्ध कै ॥ भाग
लीजे सबै खर्ल्ल में डारिकै ॥ घोटिये हेम रंगै दिनै एक ही ॥ विस्व तापै हरै नाम याको तही
आदके रंग में वल्ल द्वौ दीजिये ॥ पथ्य में मूंग दिजे मा तहा लीजिये ॥ देइ तत रोग जौरै शीघ्रता
को हरै ॥ लोल नैनी सुनौ वैन निश्चै धरै ॥ १३ ॥ अथ सीतारि रसः लिख्यते ॥ चौपाई ॥

नाम सोहगा। गंधक लीजै॥ विष पारद हरतार धरीजै॥ आंग तृतिया देइ मिलाइ॥ये सब लीजै शुद्ध कराय॥ घटिका एक ताहि पिसवाइ॥ घोटि करेला रंग मिलाइ॥ याको नाम सीत अरि जानि॥ शंभु शिवा सो कह्यो बखानि॥ मिसिरी जीरा मैं सह देइ॥ सकल सुयश याको सुनि लेइ॥ सीतज्वर अरि जाइ नशाइ॥ एक द्वई चौथ्याई जाइ॥ १४॥ अथ कनक सुदर्शन रस लिख्यते॥ दोहा॥ मिरचैं पीपरि आनिकै पुनि पय शुद्ध मंगाव॥ बलि इंगुल टंकण गरल हेम बीज लै आव॥ विजया रसमें घोटिये पहर दोइ परमानु॥ कनक सुन्दरै नाम रस भयो सिद्ध पुनि जानु॥ संग्रहणी अतिसार ज्वर निश्चै जाय नशाय॥ अग्निमन्द बाढै महा ये गुण कहे सोहाइ॥ १५॥ अथ पंचामृत परपटी रस लिख्यते॥ दोहा॥ लोह अभ्रक पारदै अर्क शुद्ध सब लेहु॥ दूनो गंधक सबन ते लोह पात्र भरि देहु॥ १६॥ चौ॥ वदरी काष्ठ आंच मृदु दीजै॥ सिद्धि जानि पुनि याविधि कीजै॥ गोमय ते फिरि भूमि लिपाउ॥ तामें कदली पत्र बिछाउ॥ रस उतारि तापर सब नावै॥ फिरि कदली के पत्र बोढ़ावै॥ याविधि सो रस सिद्धि प्रमाण॥ पंचामृत परपटी बखान॥ संग्रहणी अतिसार नशाय॥ जीरण ज्वर यक्ष्मा मिटि जाय॥ सोह पांडु ज्वर अर्श नशाय॥ अमल पित्त अरु अग्नि बढ़ाय १७